मेरे नाथ !

' बिन्दु में सिन्धु ' पुस्तक से –

(स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज के स्वामी श्री शरणानन्दजी के प्रति विचार)

1) भगवानके चरणोंके शरण हो जाना सबसे श्रेष्ठ साधन है | शरणागतिसे बहुत विलक्षणता आती है, इसका हमें (शरणानन्दजी महाराजके रूपमें) बड़ा प्रमाण मिला है | शरणानन्दजी महाराजने अपनी पुस्तकोंमें जो बातें लिखी है, वह नया आविष्कार है | भगवानके शरण होनेसे वे ' शरणानन्द ' थे | बहुत सुगमतासे परमात्माकी प्राप्ति हो जाय, ऐसा उनका नया आविष्कार है | छहों शास्त्रोंसे उनकी बात नयी है | उनकी वाणी देखनेसे मालूम होता है कि शरणागति बहुत विलक्षण, अलौकिक चीज है | (page – 24)

2) गुरु बनानेसे कल्याण हो जायगा—यह बात मुझे जँचती नहीं | शरणानन्दजी महाराज की पुस्तकोंमें दो-तीन जगह यह बात आयी है कि गुरु मिल जायगा तो आपको बड़ी मुश्किल हो जायगी ! उसमें आप फँस जाओगे | फिर निकलना मुश्किल हो जायगा ! इसलिये अच्छी बातें सुनो, उनको काममें लाओ, पर जहाँतक बने, गुरु मत बनाओ | (page - 53)

3) शरणानन्दजी महाराज ने एक बात कही थी कि जो अच्छा सुनाता है, उसकी उम्र बढ़ जाती है ! लोग चाहते हैं कि इनसे बढ़िया बातें मिलती रहें | इसलिये सुननेवालोंकी सद्भावनाके कारण वह जल्दी नहीं मरता | (page – 85)

4) शरणानन्दजीमें यह विशेषता थी कि वे अच्छी बातोंको अपनी मानते ही नहीं थे | अच्छी बातें हमारी नहीं है, भगवान् की हैं और भगवान् की कृपासे आती हैं | (page – 85)

5) एक आदमीने शरणानन्दजी महाराजसे कहा कि जिनके पास ज्यादा धन है, वे आधा धन निर्धनको दे दें तो वे भी सुखी हो जाएँ | शरणानन्दजीने पूछा कि क्या तुम्हारा पक्का विचार है ? वह बोला कि हाँ, पक्का विचार है | शरणानन्दजीने कहा कि मेरी आँखें नहीं हैं, तुम्हारे पास दो आँखें हैं तो एक आँख मेरेको दे दो | एक आँखसे तुम्हारा भी काम चल जायगा और मेरा भी | यह सुनते ही वह भाग गया, ठहरा नहीं ! कारण यह है कि लोग भीतरमें दूसरेका धन देखकर जलते हैं, पर बाहरसे निर्धनोंके हितकी कोरी बात बताते हैं | इसलिये भगवान् के समान दूसरेका हित चाहनेवाला कोई नहीं हैं | (page – 131)

6) शरणानन्दजीकी बातें जल्दी समझमें नहीं आती | उनकी बातें बड़ी विचित्र हैं | उन्होंने कहा है कि मैं एक क्रान्तिकारी संन्यासी हूँ | जितने साधन बताये, सबमें क्रान्ति कर दी एकदम ! ऐसी विचित्र बातें बतायी हैं कि आदमीका कान खुल जाय, आँख खुल जाय, होश आ जाय !
(page - 170)

7) शरणानन्दजीसे किसीने पूछा कि महाराज, यहाँ कार्यक्रम पूरा करके आप कहाँ जाओगे ? वे बोले कि फुटबालको क्या पता कि खिलाड़ी उसे कहाँ लुढकायेगा ? जहाँ लुढकायेगा, वहीं जायेंगे | इस तरह शरणागतका भाव फुटबालकी तरह होता है | प्रिया और प्रियतमके खेलमें फुटबाल बन जाओ | दोनोंके चरणोंका स्पर्श हो और दोनों पीछे-पीछे भागें | दोनोंकी जय-पराजय भी हमारे हाथमें ! हमें किसीकी गरज नहीं और प्रिया-प्रियतम दोनोंको हमारी गरज ! फुटबालके खेलमें जो ठोकर मार दे, उसकी जीत और जो ले ले, उसकी हार ! (page – 179)

8) मैंने वेदान्तके आचार्यतककी पढाई की है, पर यह बात पुस्तकोंमें नहीं मिली, सन्तोंकी वाणीमें मिली है | सन्तोंकी वाणीसे जो ज्ञान हुआ है, वह पढ़ाईसे नहीं हुआ है | जबतक जड़तासे सम्बन्ध रहेगा, तबतक तत्वकी प्राप्ति नहीं होगी | यह सम्बन्धकी बात मेरेको वेदान्तकी पुस्तकोंमें नहीं मिली ! (page – 204)

9) तीनों योगमार्गोंका खुलासा विशेषतासे शेठजीकी वाणीमें हुआ है | इससेभी विशेष खुलासा शरणानन्दजीकी वाणीमें हुआ है | शरणानन्दजीने एक बात विशेषतासे कही कि इन तीनोंका जो अन्तिम निचोड़ है, वह साधक पहले ही धारण कर ले तो जल्दी कल्याण हो जाय | (page – 207)

10) शरणानन्दजी महाराजने अपनेको क्रान्तिकारी संन्यासी कहा है | उनकी पुस्तकोंमें गीताजीकी असली-असली गहरी बातें आती हैं | इतने जानकर होनेपर भी उनमें अपनी जानकारीका अभिमान कभी आया ही नहीं ! उनकी मान्यता थी कि सिद्धान्त भगवानका होता है, पर व्यक्ति अपना मानकर उसको अशुद्ध कर देता है | वे कहते थे कि संसारकी कोई वस्तु व्यक्तिगत है ही नहीं | उनहोंने ऐसी बारीक-बारीक बढ़िया बातें बतायी हैं, जो पहलेवाली बातोंसे भी विशेष हैं और उनसे आदमीमें बहुत जल्दी परिवर्तन होता है | उनहोंने सब सिद्धान्तोंसे आगेकी बातें निकालकर कही हैं | उनमें भी उनहोंने ‘ हरि-आश्रय ’ और ‘ विश्राम ‘ को सबसे श्रेष्ठ बताया है | उनके अनुसार कर्मयोगी और ज्ञानयोगी—दोनों ही भक्तिमार्गके अधिकारी होता हैं | मुक्तिमें कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग तथा भक्तिमार्गमें कोई फर्क नहीं है, पर प्रेमकी प्राप्ति केवल भक्तको ही होती है | कर्मयोग और ज्ञानयोग तो साधन हैं, पर भक्तियोग साध्य है | (page – 213)